Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

# शब्दशास्त्र महिमा आज के संबंध में

डॉ0 हरिशंकरमणि त्रिपाठी
सहायकप्राध्यापकः व्याकरणविभागः,
जे. एन. एम. संस्कृत महाविद्यालयः, चाईबासा,
मण्डलम्–पश्चिमी सिंहभूम, झारखण्डराज्यम्, भारत।

---

**Article Info**
Volume 4, Issue 4
Page Number : 10-13
**Publication Issue :**
July-August-2021
**Article History**
Accepted : 03 July 2021
Published : 10 July 2021

**सारांशः** – अर्थविषयक बोध शब्द के बिना सम्भव नहीं है और शब्दों का तात्त्विक बोध व्याकरण के बिना सम्भव नहीं है। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि अर्थप्रवृत्ति का मूलतत्त्व विवक्षा है, न कि किसी वस्तु (अर्थ, पदार्थ) का होना या न होना। तपती जेठ की दुपहरी में यदि कोई कहे" आज तो आकाश से अंगारे बरस रहे हैं।" तो जलते अंगारे और बारिस इन दोनों पदार्थों के वहाँ न होने पर भी अर्थप्रवृत्ति होती है।

**मुख्यशब्दः–** अर्थविषयक, शब्दः, व्याकरण, शास्त्रम्, संस्कृत, वाङ्मय, भाषा।

---

"**काणादं पाणिनीयं च सर्वशास्त्रोपकारकम्**" इस उक्ति के अनुसार संस्कृत वाङ्मय में व्याकरण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्याकरण वह निकपोपल है जिसके द्वारा भाषा का परिमार्जित एवं विशुद्ध रूप सामने आता है। शब्द की व्याक्रिया करना ही व्याकरण शास्त्र का व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ है। क्योंकि व्याकरण शब्द की व्युत्पत्ति ही ऐसी है–

"**व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः येन तद् व्याकारणम्**" यद्यपि नित्य ब्रह्मात्मक शब्द की व्याक्रिया व्याकरण सीमा से परे है। तथापि रेखागवय न्यायेन" असत्ये वर्त्मनि स्थित्वा ततः सत्यं समीहते "इस अभियुक्तोक्ति के आधार पर व्याकरण के द्वारा शब्द की व्याक्रिया की जाती है। इस व्याकरणशास्त्र शब्द की व्युत्पादन के द्वारा सर्वशास्त्रोपकारक होता है वह वेदांगों में मुख की भांति प्रधान है। धातु और प्रत्ययों की आधारशीला पर शब्दों का निर्माण कर उसके अन्तराल में निहित स्वारसिक अर्थ की अभिव्यक्ति कराना व्याकरण का प्रधान लक्ष्य है। व्याकरण वह निरापद राजमार्ग है जिस पर अबाधरूप से चलते हुए भाषा की समस्त विधाओं का आलोडन भलिभाँति किया जा सकता है।

भारत में व्याकरण के अध्ययन और अध्यापन की परम्परा बहुत पुरानी है। संस्कृत व्याकरण ने शब्द के जिस व्यापक और नित्यस्वरूप का निरूपण किया है तथा शब्द में अर्थप्रकाशन की जिस विधा को प्रस्तुत किया है वह अपने में अनुपम है। व्याकरणशास्त्र का प्रथम प्रवक्ता कौन है? इस प्रश्न का यही उत्तर है कि जिस प्रकार समस्त

**Copyright:** © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ज्ञान और समस्त विद्याओं का प्रवक्ता। ब्रह्मा को माना जाता है, उसी प्रकार व्याकरण का प्रथम प्रवक्ता भी ब्रह्मा ही है। ऋग्तन्त्रकार ने लिखा है–

**ब्रह्मा बृहस्पतये प्रोवाच, बृहस्पतिरिन्द्राय, इन्द्रो भारद्वाजाय, भारद्वाज ऋषिभ्यः ऋषयो ब्राह्भणेभ्यः'' 1/4''**

महाभाष्यकार पतञ्जलि ने भी इन्द्र के लिए बृहस्पति द्वारा व्याकरण के पारायण की बात इस प्रकार कही है– **बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच नान्तं जगाम। बृहस्पतिश्च प्रवक्ता, इन्द्रश्चाध्येता दिव्यं वर्षसहस्रमध्ययनकालः न चान्तं जगाम।।** (महाभाष्य प0पृ0 58)

इन्द्र का व्याकरण प्रवचन कर्तृत्व तैत्तिरीयसंहिता में भी कहा गया है– **वाग् दै पराच्यव्याकृता अवदत्। ते देवा इन्द्रमब्रुवन् इमां नो वाचं व्याकुरू इति। तामिन्द्रो व्याकरोत्।**

इस उपर्युक्त विवेचन से सिद्ध होता है कि व्याकरण की परम्परा प्राचीन एवं सनाती है। वाल्मीकिरामायण जो आदिकाव्य है उसके द्वारा भी इस बात की सम्पुष्टि होती है। वहाँ हनुमानजी के सम्बन्ध में कहा गया है–

**नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्। बहुव्याहरतानेन न किंचिदपभाषितम्।। (किष्किन्धा 3.29)**

व्याकरण की परम्परा बहुत पुरानी है यह बात इसी से स्पष्ट हो जाती है कि आचार्य पाणिनि के अपनी अष्टाध्यायी में शाकल्य, गार्ग्य, भारद्वाज, चाक्रवर्मण, स्फोटायन, गालव आदि दश प्राचीन वैयाकरणों के नाम का उल्लेख किया है अपितु प्राचीन वैयाकरणों की कतिपय संज्ञाओं का यथावत् ग्रहण भी अपनी अष्टाध्यायी में किया है। उदाहरण के लिए पाणिनि का सूत्र है– 'आङो नास्त्रियाम्' यहाँ आङ् से किसका ग्रहण किया जाय ऐसा कोई संकेत पाणिनि ने नहीं किया है। किन्तु इस सूत्र की व्याख्या करते हुए भट्टोजिदीक्षित लिखते हैं– आङिति टा संज्ञा प्राचाम्'' प्राचीनों के अनुसार आङ् यह तृतीया के एकवचन टा विभक्ति की संज्ञा है। इसी प्रकार ''औङ् आपः'' इस सूत्र में औङ् पद से प्रथमा एवं द्वितीया के द्विवचन का ग्रहण भी प्राचीन वैयाकरणों के आधार पर किया गया है। वर्तमान समय में व्याकरण की संख्या नव (9) सुनी जाती है। वह इस प्रकार है–

**ऐन्द्रं चान्द्रं काशकृत्स्नं कौमारं शाकटायनम्। सारस्वतं चापिशलं शाकलं पाणिनीयकम्।।**

इनमें शाकटायन सारस्वत आदि कतिपय व्याकरण ही सम्प्रति उपलब्ध है ऐसा सुना जाता है। पाणिनि से पूर्व चार हजार सूत्रों से युक्त भाष्यवार्तिकादि से उपवृंहित कलेवर लौकिक तथा वैदिक उभयविध शब्दसाधुत्व पारायण कोई व्याकरण था ही नहीं, क्योंकि स्वयं पाणिनि अपने से पूर्व के वैयाकरणों का नामोल्लेख अपनी अष्टाध्यायी में किया है। इसलिए व्याकरण का अस्तित्व और उसका वेदांगत्व पाणिनि से पूर्वकालिक है यह बात असंदिग्ध है। श्री भार्गवशास्त्री द्वारा सम्पादित नवान्हिकमहाभाष्य की भूमिका में महेश्वर जयद्रथ विरचित हरचरित चिन्तामणि का शब्दशास्त्रावतार प्रकाशित हुआ है। उससे विदित होता है कि नन्दनृपति के समय पाटलिपुत्र में वर्ष नामक गुरू से विद्याध्ययन की कामना से पाणिनि वहाँ गये थे। विद्याकाम पाणिनि ने सनकादि सिद्धों के साथ भगवान् शंकर की आराधना की और उनके वर प्रसाद से चतुर्दशसूत्रात्मक वर्णसामाम्नाय की उपलब्धि पाणिनि को हुई। ये चौदह सूत्र ही पाणिनि व्याकरण की आधारशीला है। पाणिनि के शिष्य द्वारा रचित'' पाणिनीय शिक्षा'' में लिखा हुआ है।

**येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्। कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं, तस्मै पाणिनये नमः।। (पा0 शि0 57)**

ये चौदह सूत्र जिन्हें प्रत्याहारसूत्र भी कहा जाता है इनके लिए अक्षरसमाम्नाय शब्द का प्रयोग किया गया है। आम्नाय, समाम्नाय शब्द वेद के लिए प्रयुक्त होते हैं। यहाँ चौदह सूत्रों केलिए समाम्नाय शब्द के प्रयोग द्वारा यह व्यक्त किया गया है कि ये भी वेद की भाँति अनादि अपौरूषेय है। इन चौदह सूत्रों के अन्त में ण् क् ङ् च् आदि जो चौदह अनुबन्ध लगे हुए हैं ये महेश्वरकृत हैं। नन्दिकेश्वरकृत काशिका में इन चतुर्दश सूत्रों की व्याख्या के अवसर पर कहा गया है–

**अत्र सर्वत्र सूत्रेषु अन्त्यं वर्णचतुर्दशम्। धात्वर्थं समुपादिष्टं पाणिन्यादीष्टसिद्धये।।**

यहाँ धात्वर्थ का अर्थ है धातुमुलकशब्दशास्त्र की प्रवृत्ति के लिए इन अनुबन्धों को चौदह सूत्रों में लगाया गया है।

**सारांश–**

व्याकरण शब्द प्रधान है एवं सांसारिक सम्पूर्ण व्यवहार का साधन शब्द ही है। क्योंकि यदि शब्दनामक तत्त्व संसार में नहीं रहता तो किंकर्तव्यविमूढ़ इस संसार की कल्पनातीत स्थिति होती। इसीलिए आचार्यदण्डी ने कहा है–

**इदमन्धतमः कृत्स्नं, जायेत भुवनत्रयम्। यदि शब्दात्मकं ज्योतिरासंसारं न दीव्येते।। (काव्यदर्श 1/4)**

यह शब्दतत्त्व अनादिनिधन और अक्षर (व्यापक) है। नामरूपतामक यह सारा संसार उसी का विवर्त है। विवर्त अतात्त्विक अन्यथाभाव को कहते हैं, अर्थात् किसी वस्तु में वस्तुतः कोई परिवर्तन हुए बिना जोपरिवर्तन दिखाई देता है, दूसरी आकृति या क्रिया का भान होता है, वह विवर्त है। जैसे कभी–कभी चमकीली सीपी चाँदी प्रतीत होती है यह रस्सी साँप दिखाई पड़ती है। ऐसी स्थिति में सीपी या रस्सी में कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं होता, फिर भी चाँदी या साँप की प्रतीति होती है। सीपी या रस्सी का विवर्त चाँदी या साँप है। शब्द की इस महनीयता को व्यक्त करते हुए महावैयाकरण भर्तृहरि का कहना है कि

**अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्। विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः।। (वा0ब्र0 1/कारिका)**

शब्दब्रह्म है ब्रह्म वह है जिसका ना कोई आदि है न अन्त। अनादि अनन्तशब्द परावाक रूप है जिसके विवर्तरूप संसार के सभी पदार्थ नामवत् है। (क्योंकि अनाम पदार्थ कोई नहीं, इसलिए सभी पदार्थ शब्दतत्त्व के विवर्त है) इसका व्याकरण दर्शन में वहीं स्थान है जो अन्य दर्शनों में ब्रह्म का है। शब्दब्रह्म की विशेषता यह है कि वह अपने विवर्तों से, वैखरीरूप में पदार्थों में सीधा जुड़ा हुआ है। प्रत्येक पदार्थ अपने नाम (शब्द) से अनुविद्ध है मानों नाम के अतिरिक्त पदार्थ की कोई सत्ता ही नहीं। यदि पदार्थ शब्द के विवर्त न होते तो शब्द से उनकी प्रतीति भी नहीं होती। ''मीठा'' कहने से लड्डू, जलेबी आदि की प्रतीति होती है, अचार की नहीं। क्यों? अचार मीठे से नहीं बना है जो जिससे नहीं बनता, उससे उसकी प्रतीति भी नहीं होती। शब्द से प्रत्येक अर्थ की प्रतीति होती है, इसलिए प्रत्येक अर्थ (पदार्थ) शब्द से बना है यही सिद्ध होता है। इस प्रकार के विलक्षण शब्द के याथार्थ्य का बोध व्याकरण के बिना उपायान्तर से असम्भव है। भर्तृहरि कहते हैं– **अर्थप्रवृत्ति तत्त्वानां शब्दा एवं निबन्धनम्। तत्त्वावबोधः शब्दानां नास्ति व्याकरणादृते।। (वा0ब्र0 13/कारिका)**

अर्थप्रवृत्ति तत्त्व का कारण शब्द ही है। अर्थविषयक समस्त प्रवृत्ति शब्दों के द्वारा ही सम्भव होती है और शब्दों का तात्त्विकबोध व्याकरण के बिना सम्भव नहीं हो सकता।

**निष्कर्ष** – यद्यपि अर्थविषयक बोध शब्द के बिना सम्भव नहीं है और शब्दों का तात्त्विक बोध व्याकरण के बिना सम्भव नहीं है। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि अर्थप्रवृत्ति का मूलतत्त्व विवक्षा है, न कि किसी वस्तु (अर्थ, पदार्थ) का होना या न होना। तपती जेठ की दुपहरी में यदि कोई कहे'' आज तो आकाश से अंगारे बरस रहे हैं।'' तो जलते अंगारे और बारिस इन दोनों पदार्थों के वहाँ न होने पर भी अर्थप्रवृत्ति होती है। घटनाक्रम क्या है? अर्थप्रवृत्ति में इसका कुछ भी महत्त्व नहीं,'' वक्ता क्या कहना चाहता है?'' इसी का महत्त्व है। वक्ता की यह चाह (इच्छा) ही विवक्षा है और यह अर्थों को जैसे चाहे वैसे प्रवृत्त कर देती है। ''खपुष्प'' जैसे अत्यन्त अप्रसिद्ध पदार्थों से भी अर्थप्रवृत्ति होती है। यह विवक्षा शब्दाधीन है और शब्दों को तत्त्वावबोध व्याकरण से ही होता है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. व्याकरण शास्त्र का इतिहास।
2. वाक्यपदीय ब्रह्मकाण्ड
3. महाभाष्य पश्पशाह्निक
4. तैत्तिरीय संहिता
5. वाल्मीकि रामायण
6. सिद्धांत कौमुदी (भट्टोजिदीक्षित)
7. काव्यादर्श (दण्डी)
8. पाणिनीय शिक्षा–57